" शिक्षा के ज़रिए समुदाय के जीवन में बेहतरी ला सकते हैं " : मीनाक्षी आर्या

भास्कर उप्रेती

मीनाक्षी आर्या

उत्तराखण्ड में ऊधम सिंह नगर जनपद स्थित रुद्रपुर के राजकीय प्राथमिक विद्यालय महराया ने अपनी सकारात्मक उपलब्धियों के चलते सबका ध्यान आकर्षित किया है। यहाँ की शिक्षिका मीनाक्षी आर्या ने अपने विशेष प्रयासों से लड़कियों का नामांकन ही सुनिश्चित नहीं किया है, बल्कि पढ़ने-लिखने में गुणवत्ता लाकर इस बदलाव को ईस्थायी बनाने का भी काम किया है। उनके इन्हीं प्रयासों पर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सदस्य भास्कर उप्रेती ने उनसे बातचीत की है। प्रस्तुत हैं उसके कुछ अंश :

भास्कर उप्रेती : मीनाक्षीजी, बचपन और पढ़ाई-लिखाई की ख़ास यादें क्या रहीं?

मीनाक्षी आर्या : बचपन नैनीताल में गुज़रा, वहीं पूरी शिक्षा ली। यह आधुनिक शहर था, इसलिए शिक्षा भी अच्छे से हो गई। हाँ, जीजीआईसी नैनीताल ख़ास रूप से याद आता है जहाँ मेरे सपनों ने आकार लिया, वहीं कुमाऊँ विश्वविद्यालय के डीएसबी परिसर में पढ़ाई-लिखाई की गुणवत्ता बहुत अच्छी थी। नैनीताल ने मुझे आगामी जीवन के लिए सक्षम बनाया। विवाह के बाद मेरठ पहुँची, और कुछ समय बाद राजकीय सेवा के लिए नैनीताल के पड़ोसी जनपद ऊधम सिंह नगर लौट आई।

भास्कर उप्रेती : एक शिक्षिका के रूप में इस विद्यालय में अपनी भूमिका को लेकर क्या कहेंगी?

मीनाक्षी आर्या : 2014 से इस विद्यालय में हूँ। शुरुआत के कुछ वर्ष समुदाय को समझने में लग गए। यहाँ छोटे और मध्यम किसान हैं जो मज़दूरी भी करते हैं। मैंने देखा कि गाँव में लड़कियाँ होने के बावजूद वे विद्यालय नहीं आ रही थीं। उनका नामांकन ही नहीं था। जिन कुछ लड़कियों के नामांकन थे, उन्हें भी बच्चे सँभालने, चूल्हा-चौका या मटर तोड़ने जैसे घरेलू कामकाज में लगा दिया जाता था। इस समस्या पर समुदाय के साथ 2019 तक लम्बी बातचीत चली। विद्यालय बुलाने पर अभिभावक आते नहीं थे। शुरू में घर जाने पर भी बात करना पसन्द नहीं करते थे। धीरे-धीरे ही उनका भरोसा जीत सकी।

भास्कर उप्रेती : इस भरोसे को जीतने के लिए किस तरह के प्रयास किए?

मीनाक्षी आर्या : सबसे पहले असेम्बली को रोचक बनाया। विद्यार्थियों को रोचक लगने वाले नए गीत सिखाए। ढोलक, ड्रम जैसे वाद्य यंत्रों और साउंड सिस्टम का इस्तेमाल बढ़ाया। असेम्बली की ज़िम्मेदारी विद्यार्थियों को सौंपनी शुरू की। ये उपाय उनमें आत्मविश्वास बढ़ाने में कारगर हुए। मैंने विद्यार्थियों से दोस्ती के ज़रिए ही उन घरों में आना-जाना शुरू किया जिन घरों से लड़कियाँ नामांकित नहीं थीं। पारम्परिक सोच के चलते अभिभावक कहते, "लड़कियाँ शिक्षा लेकर क्या करेंगी"; "उन्हें घर और खेती के काम करना चाहिए"; वग़ैरह। संवेदनशीलता बरतते हुए मैं बस यही कहती, "आप कुछ दिन भेजकर देखिए लड़कियों को, और आपको अच्छा लगेगा!" जब वे एक बार विद्यालय आने लगीं तो अच्छा माहौल बन गया।

अब गाँव की सभी लड़कियों का विद्यालय में नामांकन है। लड़कों की तुलना में उनकी उपस्थिति भी अच्छी रहती है। लेकिन पाँचवीं के बाद उनके लिए शिक्षा जारी रख पाना अब भी एक चुनौती है। इसके लिए उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के साथ मिलकर प्रयास कर रहे हैं। अभी तक तीन लड़कियाँ इंटर तक पहुँची हैं, और दो अभी हाई स्कूल में पढ़ रही हैं। मुझे विश्वास है, आने वाले दिनों में सभी लड़कियों का हाई स्कूल और इंटर उत्तीर्ण कर पाना आम हो जाएगा। विद्यालय से पासआउट लड़कियाँ मेरे सम्पर्क में रहती हैं, और अपने संघर्ष व उपलब्धियाँ बताती हैं।

भास्कर उप्रेती : विद्यालय में ऐसी कोई पहल जिसने शुरुआत में समुदाय के बीच असरकारक सन्देश दिया हो?

मीनाक्षी आर्या : बिल्कुल। एक बार जब नामांकन की स्थिति सन्तोषजनक हो गई तब हमें विद्यालय प्रबन्धन समिति (एसएमसी) बैठक की ज़रूरत महसूस हुई। मैंने अभिभावकों को आमंत्रित किया, और उन्हें बैठक में विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन व उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। चौथी-पाँचवीं के कुछ विद्यार्थी जब धाराप्रवाह पढ़कर दिखाते थे, उन्हें देखकर

अभिभावक ख़ुश होते थे। यह देखकर शुरुआत में जो अभिभावक विद्यालय के प्रति उदासीन रहते थे, धीरे-धीरे बैठकों में आने लगे। मुझे भी महसूस हुआ कि अभिभावकों के साथ विद्यालय की प्रक्रियाओं और विद्यार्थियों के सीखने से जुड़ी बातों को पारदर्शिता के साथ साझा करना ज़रूरी है।

भास्कर उप्रेती : आपके काम का अगला चरण क्या था, कैसे शुरू हुआ?

मीनाक्षी आर्या : मॉर्निंग असेम्बली और अभिभावकों के साथ संवाद तो जारी रखा ही, अब विद्यार्थियों की व्यक्तिगत कहानियाँ सुननी शुरू कीं। चाइल्ड प्रोफ़ाइलिंग के ज़रिए उनके जीवन और दिनचर्या में झाँकने की कोशिश की। उनकी कहानियों के बीच कुछ पढ़ना-लिखना भी हो जाता। मुझे कुछ जानकारियाँ मिलीं जो मैं नहीं जानती थी—किस विद्यार्थी के घर में घरेलू हिंसा है, कहाँ परिवार कर्ज़ में है, जैसी कई अहम बातें। ये सब विद्यार्थियों के साथ आगे काम करने में मददगार हुईं।

सकारात्मक वातावरण बनने से अब मैं अकादमिक कामों पर अधिक ध्यान दे पर रही थी। मैंने सभी विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान सुनिश्चित करने का निश्चय किया। उदाहरण के लिए, ध्वनि जागरूकता के अभ्यास कराना, अक्षर से ध्वनि और ध्वनि से अक्षर तक पहुँचने की प्रक्रिया को सहज बनाना, आदि। स्थानीय या घर की भाषा को कक्षा में सम्मानजनक जगह और शिक्षण में निरन्तर प्रयोग के अवसर बनाना।

चित्र 1 : चित्र पुस्तकों का गहराई से अवलोकन करते विद्यार्थी

मैंने सीखने के प्रतिफलों को आसानी से हासिल किए जा सकने वाले लक्ष्यों में बाँट लिया। उदाहरण के लिए, विद्यार्थी अपने परिवेश से जुड़े परिचित शब्द लिख सकें, उनका एक निश्चित शब्द भण्डार विकसित हो, वे उन शब्दों का अलग-अलग सन्दर्भ में इस्तेमाल कर सकें, आदि। जैसे एक प्रतिफल है—चित्र और अपने अनुभव के आधार पर अर्थ निर्माण करना। इसे विद्यार्थियों की आयु और सीखने के स्तर के अनुसार अलग-अलग किया जा सकता है। पहली कक्षा में उन्हें चित्र देखना और परखना सिखाती, जबकि तीसरी कक्षा में चित्र देखकर उसका विवरण बताने, और कल्पना से जोड़कर कोई कहानी बनाने को कहती। इससे विद्यार्थियों की नज़रें अपने आस-पास मौजूद मुद्रित सामग्री को पहचानने और समझने लगीं। उन्हें थोड़ा लिखकर भी बताने को कहने लगी।

भास्कर उप्रेती : गणित में किस तरह से किया?

मीनाक्षी आर्या : गणित में विद्यार्थियों के दैनिक जीवन के अनुभवों को आधार बनाया। उदाहरण के लिए, कई विद्यार्थी दुकान का हिसाब-किताब मौखिक रूप से कर लेते थे। उन्हें बताया कि जो वे मौखिक रूप से कर लेते हैं, उसका लिखित निरूपण भी कर सकते हैं। छोटे विद्यार्थियों को उँगलियों, कंकड़ों, गिनमाला, पेज, आदि से गिनना सिखाया। साथ ही, परिचित अंकों को शब्दों में लिखना, रिवर्स काउंटिंग, आदि के अभ्यास कराए। बड़े विद्यार्थियों के साथ आस-पास मौजूद आकृतियों, पैटर्न, और खिड़की की लम्बाई-चौड़ाई को मापने जैसे सरल मापन, तथा घर से विद्यालय की दूरी या तापमान का अनुमान, हल्की-भारी चीज़ें महसूस कराना, आदि पर काम किया। धैर्यपूर्वक किए गए काम के सकारात्मक परिणाम सामने आने लगे, और यह उच्च कौशलों पर काम करने का आधार बना।

भास्कर उप्रेती : बुनियादी काम हो जाने से क्या शिक्षक का आगे का काम आसान हो जाता है, कैसे?

मीनाक्षी आर्या : बिल्कुल। जिन विद्यार्थियों ने बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में कुछ योग्यता हासिल कर ली थी, उसे एसएमसी बैठक में अभिभावकों के समक्ष रखा। इसका अच्छा असर हुआ। वे सोचने लगे कि विद्यालय के शिक्षक उनके बच्चों के हित में गम्भीरता से काम कर रहे हैं। जब कक्षा 3 के विद्यार्थी तीन अंकों की संख्याओं का जोड़ और हासिल वाले सवाल आसानी से करने लगे तब गुणा के भीतर छुपी जोड़ की अवधारणा पर समझ बनाना शुरू किया। जैसे, 7 अट्ठा 56 में संख्या 7 की 8 बार आवृत्ति, यानी 7 को 8 बार जोड़ना। जब विद्यार्थी समझ गए कि गुणा वास्तव में बार-बार होने वाला जोड़ का एक छोटा और सुविधाजनक तरीक़ा है, वे इस 'टूल' का इस्तेमाल बड़ी संख्याओं के लिए भी करने लगे।

भास्कर उप्रेती : एफ़एलएन में पुस्तकालय के उपयोग पर बड़ा ज़ोर है। विद्यालय में आप किस तरह का काम कर रही हैं?

मीनाक्षी आर्या : सबसे पहले मैंने पुस्तकालय कक्ष को विद्यार्थियों के बैठने की अच्छी जगह बनाने पर काम किया। पुस्तकें व्यवस्थित कीं, उनकी ग्रेडिंग की। फिर विद्यार्थियों की मदद से पुस्तक वितरण और रखरखाव की व्यवस्था बनाई। हर कक्षा के लिए पढ़ने का समय निश्चित किया गया जिसे 'पढ़ने की घण्टी' या 'आनन्द की घण्टी' कहा।

भास्कर उप्रेती : आपने शुरुआती स्तर पर किन बातों को प्राथमिकता दी?

मीनाक्षी आर्या : पहले चरण में कुछ ज़रूरी काम सभी विद्यार्थियों को करने थे। माने उन्हें आस-पास की चीज़ों को ग़ौर से देखना था। यहीं से शब्द भण्डार की शुरुआत होती है। पुस्तकों के चित्रों को ध्यान से देखने और उन पर विस्तार से बात करने से विद्यार्थियों का अवलोकन कौशल बेहतर हुआ, वे सड़क किनारे के होर्डिंग, दुकानों पर लिखे नाम और पैकेटों के रैपर पर मुद्रित सामग्री को पढ़ने की कोशिश करने लगे। इसी तरह, पुस्तकों से हासिल अनुभवों पर विद्यार्थियों को अनुमान लगाने के मौक़े दिए गए। वे *अम्मा, सबकी प्यारी अम्मा* कहानी के बारे में सोचकर

नई-नई कल्पनाएँ करने लगते। एक विद्यार्थी तो इस बारे में निश्चित था कि वह गिलहरी को पाल ही लेगा।

भास्कर उप्रेती : क्या तब अक्षर ज्ञान पर अलग से भी काम करना पड़ता है?

मीनाक्षी आर्या : मेरा मानना है कि अक्षर ज्ञान पर ज़ोर देने के बजाय बाल साहित्य की किसी पुस्तक में इंगेज करें। उनसे यथासम्भव विषयवस्तु और चित्र पर बातें करती हूँ। अक्षर मात्राएँ, पढ़ना सीखने की प्रक्रिया का एक छोटा हिस्सा है, वह धीरे-धीरे आ जाता है। प्रतिदिन डेढ़ घण्टे एफ़एलएन पर काम करती हूँ। इसमें समग्रता में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना अहम हैं।

विद्यार्थियों को पढ़ने के मौक़े देना, उनके अनुभव सुनना, लिखने का अभ्यास कराना, कविता पर विस्तार से बात करना, पढ़ी गई कहानी को सुनना और असेम्बली में अपनी बेहतर रचनात्मकता प्रस्तुत करना, यह सब एफ़एलएन में करना ज़रूरी है।

भास्कर उप्रेती : अपने काम के प्रभाव को स्पष्टता से कैसे देख पाती हैं?

मीनाक्षी आर्या : काम का प्रभाव साफ़ दिखाई देना चाहिए। एक दिन उमर की माँ उसे इस विश्वास के साथ अस्पताल ले गईं कि वह पढ़ना सीख गया है। वह परचा बनवा देगा, और दवाई लेते समय भी ध्यान देगा। माँ को बेटे पर गर्व है कि वह शिक्षित हो रहा है। सुमेला को जब शुरुआत में चित्र कथा की पुस्तक दी गई तो वह घबराई-सी मुद्रित शब्द ढूँढ़ने लगी। बातचीत में पता चला कि उसके लिए छपे हुए शब्द ही पढ़ाई है। जब पुस्तक के चित्रों पर धैर्य से बात हुई, और उसे शब्दों के बिना कहानी समझ आ गई तब उसकी धारणा ही बदल गई। अब वह आत्मविश्वास के साथ मुद्रित सामग्री पढ़ने का प्रयास करती है।

भास्कर उप्रेती : बाल पुस्तकालय का विद्यार्थियों के सीखने पर क्या प्रभाव पड़ा?

मीनाक्षी आर्या : पढ़ने की घण्टी के दौरान मैंने नियमित रूप से एक कहानी को हावभाव से पढ़ना शुरू किया। इसमें मुझे भी आनन्द आता, और विद्यार्थी भी रस लेकर सुनते। बीच-बीच में रुककर सभी विद्यार्थियों से चर्चा होती।

छोटे विद्यार्थियों को पढ़ने-देखने के लिए *बरखा क्रमिक पुस्तकमाला* की पुस्तकें दी गईं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को समझ के साथ स्वयं से पढ़ने के मौक़े देना है। इनकी कहानियों में विद्यार्थियों के अपने आस-पास के अनुभव हैं, जो जुड़ाव बनाते हैं। चित्र और कथानक सरल हैं, और विषयवस्तु स्तरानुसार है। जब विद्यार्थी शुरुआती पढ़ना सीख रहे होते हैं तब ये पुस्तकें दी जाती हैं। इन्हें वे बहुत पसन्द करते हैं, और उनका सीखना गति पकड़ता है।

चित्र 2 : अपनी पसन्द की पुस्तक चुनकर तल्लीनता से पढ़ते विद्यार्थी

बाल साहित्य के इस्तेमाल से विद्यार्थियों में पुस्तक का भय दूर हुआ। उन्हें चित्र देखने की आदत पड़ गई। इसका असर उनके अवलोकन कौशल पर पड़ा। वे चित्रों और कहानियों पर हुई बातचीत को शब्दों में लिख देते हैं। बार-बार पूछने और बताने के मौक़े मिलने से विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति में सुधार हुआ।

स्वाध्याय की आदत बनने से विद्यार्थी बाल पुस्तकालय की कई पुस्तकें ख़ुद उठाकर पढ़ गए। वे बाल पत्रिकाओं को उत्साह से पढ़ते हैं, और मज़ेदार बातों को साझा करते हैं।

भास्कर उप्रेती : हम मानते हैं कि शिक्षक को पेशेवर होना चाहिए, आप ख़ुद क्या सोचती हैं?

मीनाक्षी आर्या : जब से मुझे शिक्षक के पेशेवर विकास के मायने समझ आए, इसको लेकर सजग हूँ। शिक्षक सेमिनार, आदि में, जहाँ भी अवसर मिलता है, अपने अनुभव भेजती हूँ। ज़िला और राष्ट्रीय स्तर के कई शिक्षा सेमिनारों में प्रतिभाग भी किया है। अपने काम को और ख़ुद की भूमिका को समझने के लिए मैं बहुत कुछ लिखती रहती हूँ।

यहाँ पढ़ने-लिखने में रुचि रखने वाले शिक्षकों का एक 'सृजन समूह' है। हम हर सप्ताह ऑनलाइन जुड़ते हैं, और कई बार फ़ेस-टू-फ़ेस भी मिलते हैं। इसमें 500 से अधिक लेख साझा हो चुके हैं, और ज़्यादातर मैंने पढ़े हैं। समूह में चर्चा से लेखों को समझना आसान हो जाता है। रमेश थानवी के लेख 'शिक्षक पढ़ेगा नहीं तो बढ़ेगा नहीं' ने यह सोचने को विवश किया कि आख़िर हम अपने काम को देखते कैसे हैं। रेखा चमोली की *मेरी स्कूल डायरी* बहुत उपयोगी लगी। *पहला अध्यापक* और *डेविड ऑसबर्न और नीलबाग स्कूल* हम शिक्षकों के लिए पढ़नी ज़रूरी हैं। अब अपने पढ़ने-लिखने और काम के अनुभवों पर लिखना शुरू किया है। 'बच्चे समझकर पढ़ना कैसे सीखते हैं?' विषय पर अपने अनुभव दर्ज कर रही हूँ। इसमें बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने के संघर्ष व उपलब्धियों की कहानियाँ होंगी, छोटी-छोटी।

भास्कर उप्रेती एक दशक तक पत्रकारिता करने के बाद विगत 13 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। *पाठशाला भीतर और बाहर* सम्पादकीय टीम का हिस्सा हैं। इन दिनों ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : bhaskar.upreti@azimpremjifoundation.org